Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

* Vol-3* *Issue-5* *May 2026*

www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

कवीश्वर चन्दा झा आ हुनक रामायण

अर्चना कुमारी

शोधार्थी, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल.ना.मि. विश्वविद्यालय, दरभंगा

Article Info: *(Recieved- 16/03/2026, Accept- 12/04/2026, Published- 10/05/2026)*

DOI- 10.70650/rvimj.2026v3i50012

सारांश–

मैथिली साहित्यमे विद्यापतिक कालसँ बढ़ैत कृष्णकाव्यक परम्पराकेँ कवीश्वर चन्दा झा सर्वप्रथम तोड़लैन्हि रामकाव्य 'मिथिला भाषा रामायण' लिखि। मैथिली साहित्यमे ठेठ शब्द ठाठक प्रयोगक संगहि समसामयिक सामाजिक, राजनीतिक ओ न्यायिक व्यवस्था पर लिखलैन्हि सहज, सरल ओ सरस भावमे। हिनक विरचित रामायणक मिथिलाक मान–मर्यादा ओ परम्पराक धरोहर मानल जाइत अछि। मिथिलाक पावनि–तिहार लोक परम्पराकेँ एहि तरहेँ सन्नहित कयने छथि, जे मणिकांचन बुझना जाइत अछि।

बीज शब्द– कवीश्वर चन्दा झा, मिथिला भाषा रामायण विशेषता

प्रस्तावना–

कवीश्वर चन्दा झा मैथिली साहित्यमे एक युग प्रवर्तक रूपमे मानल गेल छथि। हिनक प्रादुर्भाव उन्नैसम शताब्दीक तृतीय दशकक अंतमे कहल जाइत अछि। ई अंग्रेजीक प्रचार–प्रसारक कारण मैथिली लोकनिक बीच आएल गत्यावरोधकेँ नव गति प्रदान कएलनि। गद्यक विकासमे अमूल्य योगदान देलनि। गीत, भजन आदिक रचना कऽ मैथिली काव्यकेँ सुरभित कएलनि। उन्नैसम शताब्दीक अन्तिम चरणमे मिथिला भाषा रामायणक रचना कए मैथिली भाषाकेँ एक गोट अद्भुत ग्रंथ समर्पित कएलनि। जाहि कारणेँ हिनका युगद्रष्टाक रूपमे प्रचारित कएल गेल। ओना मूलतः कवीश्वरक रामायणक आधार अध्यात्म रामायण रहल। मुदा कतहु ओ वाल्मीकि रामायण कतहु आनन्द रामायण, कतहु तुलसी कृत राम चरित मानस आकि प्रसन्न राघव–नाटकक सिंग हनुमन्नाटक केर सेहो सहयोग लेलनि। जेँ कि देववाणी तत्कालीन मिथिलाक प्राण–तत्व छल ओ ओकर आभा–मंडलमे अध्यात्म रामायणकेँ मुख्य धारामे राखि, लोक–परम्पराक अन्तर्गत, सूक्ष्म लोक–दृष्टि राखि, रामायणकेँ विस्तार देलनि। आ इएह कारण भेल जे मिथिला भाषा रामायणमे विभिन्न कथाकेँ जीवन संदर्भसँ जोड़ि, युगीन बना लेलनि। पौराणिक इतवृत इतिहास नहि थिक। आतेँ कवीश्वर जानल–सुनल प्रसिद्ध घटनामे जतऽ फेरबदल नहि कएलनि, मुदा अतल स्पर्शी अंतदृष्टि नवरूपमे अनबाक लेल घटनादिक रिक्तताकेँ मर्मस्पर्शी वर्णनसँ परिपूरित कए, मिथिलाक गौरव–गरिमाकेँ सम्पूरित कऽ मौलिक रूप प्रदान कएलनि। हिनक रामायणके मिथिला वर्णन, वैवाहिक वर्णन एवं लोकोक्तिक अद्भुत समायोजन लोकरंजक सिद्ध भेल। एहि रामायणक छंदक विविधता, भाषा–भावक नवता, अन्य रामायणक तुलनामे मौलिक अधिक लगैत अछि। के एहेन हएत जे हिनक मिथिला वर्णनसँ उल्लासक अनुभव नहि करत, उल्लसित नहि हएत। देखबाक थिक–

''पशु पक्षी सभ हृष्ट–पुष्ट नहि दुष्ट कुलक्षण।
कृष्णसार मृग बहुत नृपति कर सभहिक रक्षण।।
अतिशय जन सौजन्य देश मुनिजन–मनरंजन।
जे ताकी से भेट कतहु नहि सृष्टि एहन सन।।

नारि सुनयना शुभमती कुलदैवत लज्जावती।
सकल रसज्ञा नतिमती मत मतंकजवर–गती।।''[1]

हिनक षटपद्मे मिथिलाक प्राकृतिक सुरभ्यता, प्रजापालकक कर्त्तव्यशीलता, जनजीवनक मध्य पसरल सौभ्यता, सभ प्रकारक वस्तुक उपलब्धताक संग, पारिवारिक रीढ़ नारी लोकनिक शील–गुण सम्पन्ना हएब, उभरि कए आएल अछि। एहन स्वस्थ समाजक परिकल्पना करब, कवीश्वर मात्रसँ सम्भव। ओना लालदासक रामायणमे मिथिला सांस्कृतिक परम्परा ओ लोक व्यवहारक चित्रण सेहो उपरि–जुपरि अछि, मुदा एकर अछैतहु, चन्दा झाक मिथिलाक एहि सौष्ठब वर्णनमे जीवनक उल्लास उमकैत लगैत अछि। जकर एक–एक पंक्ति मिथिलाक प्राचीन गरिमाकेँ मोन पाड़बाक लेल विवश करैत अछि। लालदासक रामायणमे मिथिलाक सांस्कृतिक परम्परा ओ लोक व्यवहारक संदर्भमे अरविंद कुमार सिंह झाक विचारकेँ काटल नहि जा सकैछ। ओ कहैत छथि– ''मैथिल परम्परा ओ सामाजिक जीवनक चित्रण करबाक दृष्टिएँ 'रामेश्वर चरित मिथिला रामायण विश्वकोष थिक। रामक जन्मसँ अन्तधरिक वर्णनमे गिरिजा अर्चना, सरिता–अर्चना, पर्दा प्रथा, विवाहोत्सव, उचिती, अतिथि–सत्कार डहकन, विधिाकरी, महुअक, विद्वरागमन, समदाउन आदिक उल्लेख भेल अछि।''[2] किन्तु जखन कवीश्वर चन्दा झाक ओहि पद पर ध्यान केन्द्रित कएल जाएत, तँ स्वतः मिथिलाक रीति–रेवाजक संग एक विचित्र आत्मीय भावक उद्रेक पाठकक मस्तिष्कमे हिलकोर मारय लागत अछि। ओकर आँखि डबडबा जाइत अछि। जेना अखनहिं–अखनहि बेटीक विदागरी भऽ रहल होइक। सीता, मिथिलाक माटि परसँ ओहि अनचिन्हार नमरीक लेल प्रस्थान करैत छथि जतुक्का लोक, ओकर व्यवहार, रीति–रेवाज सभ अपरिचित अछि, ओहि कालक दृश्य आँखिक समक्ष नाचय लगैत अछि। देखल जाय–

''प्रकृति पुरुष मुख दर्शन अनुखन
जानकि सभ सुख देल।।
पाहुनि बनलि चललि प्रियतम गृह
मोर मन मति हरि लेल।।
सजल जलज जानकि दुहु लोचन
मुख विधु देखइत तोर।।
शुभ शुभ समय हृदय मोर की भेल
नयन अखण्डित नोर।।
समदाउनि गाइनि मिलि गाबथि
नोरे बसन गेल तीति।।
भन कवि 'चन्द्र' जनक युग लोचन
जलधर सरिस प्रतीति।।''[3]

ई पद सभ सीतासँ सम्बद्ध जतेक जे गीत अछि, सभक मर्म एहिसँ झूस नहि छनि। कवीश्वर चन्दा झाक रामायणकेँ विशिष्ट ग्रंथ मानैत डॉ. रामदेव झाक कहब छनि–

''मिथिला रामायण कवीश्वर चन्दा झाक ओहन महान एवं गंभीर प्रबंध रचना थिकनि जे हुनका पूर्ण यशस्वी ओ चिरस्मरणीय बना देलकनि। मैथिली साहित्यक ई गौरव ग्रंथ भारतीय वाङ्मयक रामायणीय परम्परामे सेहो एकटा स्थान बना लेलक अछि। मिथिला भाषा रामायणमे गम्भीर दार्शनिक चिन्तनक संगहि काव्यतत्त्व ओ लोकतत्त्वक अद्भुत समन्वय भेल अछि। विभिन्न प्रसंगमे कविक कतोक मौलिक उद्भावना अतिशय चमत्कार पूर्ण अछि। प्रबन्धोपयोगी चौपाइ, दोहा ओ सोरठाक अतिरिक्त पारम्परिक वर्णिक भात्रिय, मिथिला देशीय रागाधृत, विभिन्न भास ओ गीति–रीतिक शताबधि प्रकारक छंदक प्रयोग ने केवल रामायणकेँ भारतीय भाषाक अन्य रामायणसँ भिन्न ओ विशिष्ट बना देने अछि।''[4]

वस्तुतः जखन हिनक 'मिथिला भाषा–रामायण'क वैशिष्ट्य दिस ध्यान आकृष्ट करैत छी तँ एकर पाठ्यधर्मी छंदक संगहि राग–भाससँ सुसज्जित गेय गीतक समावेश, लोकचलित सहज भाषा, लोकोक्तिक सहज–सटीक प्रयोग आ मार्मिक प्रसंगकेँ ओकर मर्मधरि पहुँचब हिनक लोकप्रियताक कारण बनल अछि। खास कए रस पर एकाधिकार ओजसँ भरि दैत अछि। जकर सफल प्रयोग ओ माँ जानकीक कण्ठसँ निसृत कए कवीश्वरक उपाधि

ाकेँ सिद्ध कएलनि अछि। देखल जाय–

''हा रघुनाथ अनाथ जकाँ, दशकण्ठ–पुरी हम आइलि छी।
सिंहक त्रास महावनमे, हरिणीक समान डराइलि छी।।
चन्द्र–चकोरि अहैँक सदा, हम शोक–समुद्र समाइलि छी।
देवर–दोष कहू हम की, अपन अपराधसँ काइलि छी।।''[5]

एहि वियोग गीतमे सीताक अनुराग, अपन कएल अपराधक प्रति वर्तमान अवस्थाक प्राप्तिक कारण बूझब, सीताक महानताकेँ दर्शाएब थिक। गीतमे करुण रसक प्रवाह पाठककेँ झकझोड़ि देवामे पूर्णतः सफल अछि। आ एही ठाम कवीश्वरक संवादक मर्म अन्य रामायणक अपेक्षा बीस पड़ैत अछि। चन्दा झाक रामायणमे अधिकांश चौपाइ छन्दबद्ध अछि। एहि विशेषताक कारण कथा–प्रवाह कतहु बाधित नहि भेल अछि। दोसर, कथामे रोचकता सेहो आएल अछि। सोरठा, सबैया, रूपमाला, जयकरी, षट्पद, दोबय आदिक ठाठ एहि रामायणक वैशिष्ट्यमे सेहो परिगणित कएल जाइत अछि। एक गोट आओर विशेषता एहि रामायणमे पाओल जाइत अछि, ओ थिक छंद ओ रागक समन्वयक संग एहन प्रस्तुती जे कखनहु हँसबैत अछि, कखनहु कनबैत अछि, कखनहुँ डेरबैत अछि तँ कखनहुँ हृदयकेँ जुड़बैत अछि। हिनक रसज्ञता अद्‌भुत अछि। कवित्त ओ ६ानाक्षरीक सफल प्रयोगकेँ सुन्दरकाण्डमे देखल जा सकैछ–

''त्रिजटा कहल शुनु जानकी नवीन कथा,
बानर विशेष वर वाटिका उजारलक।।
रक्षक प्रबल रण–यक्ष लक्ष–लक्ष खेत,
मुइल मुर्च्छित कतो रावण पुकारलक।।
'चन्द्र' भन यहन न देखल शुनल छल,
अक्षय कुमार काँपटकि झट मारलक।।
कतहु न हारलक वीरता प्रचारलक,
रावण पालित हाय लङ्कापुर जारलक।''[6]

एतय रावणक बेटा अक्षय कुमारक वधक ब्याजेँ हनुमानक शौर्यगाथा सीताकेँ अचम्भित ओ स्वस्ति प्रदान कए, कवीश्वर अन्य रामायणक तुलनामे विशिष्ट लगैत छथि। रसानुकूल छन्दक प्रयोगमे चन्दा झा अप्रतिम छलाह। पूर्वो एहि बातक चर्चाक क्रममे आएल अछि जे समयानुकूल जे छंद आकि रस प्रयुक्त कएल जएबाक चाही ओ एहिसँ नहि चुकलाह अछि। कारण छंदक सम्बंध अथवा घनिष्ठता रसकेँ बढ़बैत छैक। हनुमानजी लंकामे कोहराम मचा देलनि। एहि बातकेँ कवीश्वर कोन तरहेँ अभिव्यक्त करैत छथि, देखबाक थिक–

''पड़ा पड़ा बड़ा बड़ा गृहट्‌ट जारि देलकौ।
विदेह–कन्याका–विपत्ति जानि कानि लेलकौ।।
बहुत छोट बानरे सभैक हाल कैलकौ।
प्रचण्ड दण्ड–देनिहार दूत चोर धैलकौ।।''[7]

चन्दा झा मैथिली रामायणक रचनाक लेल नव आश्रय तकैत छलाह। हुनक अन्वेषण आदर्श उपस्थित करब छल। कारण ओ शासत्रा सम्मत बात रखैत अपन एहि रामायणक रचना करबाक निआर कएलनि। जाहि लेल उपर्युक्त छल, वाल्मीकि रामायण आकि अध्यात्म रामायण। ओ अध्यात्मक रामायणकेँ एहि लेल चुनलनि जे एहिमे अपन रामायणक प्रसिद्धिक गुंजाइश छल। तुलसीकृत रामायणकेँ माटि देब, तखनहि सम्भव भऽ सकैत छल जखन अध्यात्मकेँ सर्व साधारणक लेल बोधगम्य बनाओल जाय। मिथिलाक प्रति चिरंतन प्रेम हुनक कमजोरी छलनि। ओ मैथिल समाजकेँ कोनो तरहेँ आहत नहि करय चाहैत छलाह। ओ एहि लेल कतेको ठाम मूलाधारसँ हटि सेहो गेल छथि। जेना– अन्य रामायणक मूल पाठमे रावणकेँ मन्दोदरी उपदेश ।दैत छथिन जे परनारीक अपहरण निषिद्ध कार्य थिक। ओ पुरुष जाति केँ नीचाँ नहि देखबय चाहैत छलाह।

निकर्षतः

अन्ततः ई कहब अतिशयोक्ति नहि हएत जेओ कतेको स्थलीपर जे रामायणमे वर्णित पात्र सभसँ एकात्म भाव

रखलनि अछि ओ वस्तुतः प्रशंसनीय अछि। एहिमे मातृभाषा मैथिलीक शब्द–सम्पदाक पर्याप्त उपयोग कएल गेल अछि। जाहिसँ ओ जनसाधारणक मोन मोहि लेलनि आ जनसाधारणक निकटता पाबि सकलाह।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ सूची :

1. झा कवीश्वर चन्दा, 1987, मिथिला भाषा रामायण, मैथिली अकादमी, पटना, पृ. 30
2. झा सिंह कुमार अरविंद, 2020, समालोचनाश्री, नवारम्भ, पटना, पृ. 44
3. चन्द्र पदावली, पृ. 33
4. झा मुरलीधर, 2012, पुण्यशती संगोष्ठी आलेखसँ, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, पृ. 101
5. झा कवीश्वर चन्दा, 1987, मिथिला भाषा रामायण, मैथिली अकादमी, पटना, पृ. 198
6. तत्रैव, पृ. 196, सुन्दरकाण्ड
7. तत्रैव, पृ. 215

Cite this Article

"अर्चना कुमारी, "कवीश्वर चन्दा झा आ हुनक रामायण", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal, ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:3, Issue:5, May 2026.

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author."